

भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं आधुनिक सोच

मिस. पूजा शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग, विद्या विश्वविद्यालय मेरठ
उत्तर-प्रदेश भारत।

सारांश— भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत वह ज्ञान सुशोभित है, जिसमें प्रथाएं एवं नवीन विचारों का समावेश होता है। यह नवीन विचार एवं प्रथाएं भारत में सदियों से संचित हैं। जिसमें गणित, चिकित्सा, दर्शन, खगोल विज्ञान और पारिस्थितिकी जैसे विभिन्न विषय शामिल हैं। इन सभी प्रकार के ज्ञान, प्रथाओं एवं नव विचारों को अक्सर भारतीय शिक्षा प्रणाली में नजर अंदाज किया गया है, हालांकि प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने में इनका योगदान अद्भुत रहा है। प्राचीन युग से भारत में लोगों ने प्रकृति एवं पर्यावरण के करीब रहकर ज्ञान और जानकारी प्राप्त की है, जैसे कि सतत कृषि प्रथाओं, जड़ी बूटियों के चिकित्सा पारिस्थितिकी प्रबंध आदि के दृष्टिकोण। भारतीय शिक्षा के अंतर्गत स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को शामिल करना एक ऐसे मूल सिद्धांत को उजागर करता है, जो भारत की जड़ों और गर्व को दर्शाता है। यह सिद्धांत भारतीय संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों की व्याख्या करता है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अहम हिस्सा है। यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना करता है। जो भारतीय मूल्य एवं सिद्धांतों पर आधारित हो। इस अनिश्चित दुनिया में पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को संरक्षित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। एन.ई.पी. 2020 में उच्च शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के महत्व पर जोर दिया है तथा भारतीय भाषाओं कला और संस्कृति को भी महत्व दिया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन समाहित हैं। जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण के माध्यम से विकसित है। यह प्राचीन प्रथा समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव डाल चुकी। जिसमें शिक्षा कला, प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, उत्पादन और वाणिज्य शामिल हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने भारत के शास्त्रीय और भाषण पर महत्वपूर्ण छाप छोड़ी है। जो परंतु मौखिक परंपराओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से संप्रेषित होती है भारतीय शिक्षा प्रणाली प्राचीन भारत के ज्ञान को समाहित करती है जिसमें इसकी सफलता है और बढ़ावा शामिल है और यह भारत की भविष्य की आकांक्षाओं के लिए एक दृष्टि प्रदान करती है विशेष रूप से शिक्षा स्वास्थ्य पर्यावरण और जीवन के सभी पहलुओं में। इसने सभी शिक्षा स्तरों पर पाठ्यक्रमों में भारतीय शिक्षा प्रणाली के एकीकरण की सिफारिश की है विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आधुनिक विषयों के साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली के एकीकृत समाकलन को सुविधाजनक बनाने के लिए सक्रिय रूप से उपायों का समर्थन किया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने समकालीन उच्च शिक्षा प्रणालियों में आईपीएस को समाहित करने और बढ़ावा देने के प्रयास शुरू किए हैं। प्रस्तुत लेख में भारतीय शिक्षा प्रणाली के विषय में जानकारी साझा की गई।

मुख्य शब्द— भारतीय ज्ञान प्रणाली, प्रासंगिकता, भारतीय ज्ञान प्रणाली के उद्देश्य, वेद साहित्य उपनिषद, भारतीय ज्ञान प्रणाली का वर्तमान परिदृश्य में महत्व।

प्रस्तावना— भारतीय ज्ञान प्रणाली ज्ञान, विज्ञान और जीवन—दर्शन को समाहित करती है, जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण के माध्यम से विकसित हुई है। भारतीय ज्ञान प्रणाली एक ज्ञान का भंडार है जो लगातार बौद्धिक, सांस्कृतिक, और व्यावहारिक दृष्टिकोणों को आकार देती रहती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य समकालीन सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए शोध को सक्रिय रूप से समर्थन और प्रोत्साहित करना है। वेदों और उपनिषदों सहित वेद साहित्य की समृद्ध परंपरा में निहित,

भारतीय ज्ञान प्रणाली डिजिटल शिक्षण प्लेटफार्मों में एकीकृत होने के लिए तैयार है। यह प्राचीन प्रथा समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव डाल चुकी है, जिसमें शिक्षा, कला, प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, उत्पादन और वाणिज्य शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इसने भारत की शास्त्रीय और अन्य भाषाओं पर महत्वपूर्ण छाप छोड़ी है, जो ग्रंथों, मौखिक परंपराओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से संप्रेषित होती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्राचीन भारत के ज्ञान को समाहित करती है, जिसमें इसकी

सफलताएँ और बाधाएँ शामिल हैं, और यह भारत की भविष्य की आकांक्षाओं के लिए एक दृष्टि प्रदान करती है, विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और जीवन के सभी पहलुओं में। इसने सभी शिक्षा स्तरों पर पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण की सिफारिश की है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने आधुनिक विषयों के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकृत समाकलन को सुविधाजनक बनाने के लिए सक्रिय रूप से उपायों का समर्थन किया है, ताकि विभिन्न विषयों में भारतीय ज्ञान प्रणाली की समृद्ध विरासत को बनाए रखा जा सके। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने समकालीन उच्च शिक्षा प्रणालियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली को समाहित करने और बढ़ावा देने के प्रयास शुरू किए हैं, यह मान्यता देते हुए कि यह ज्ञान पीढ़ियों से पारित होता आ रहा है। यहां राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रासंगिकता का एक अवलोकन प्रस्तुत किया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक ज्ञान के क्रमबद्ध हस्तांतरण को संदर्भित करती है, जो वैदिक साहित्य, उपनिषदों, वेदों और उपवेदों पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस प्राचीन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध विरासत को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकार करती है, जो ज्ञान के हस्तांतरण के संरचित दृष्टिकोण को उजागर करती है। स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में शामिल करना एक महत्वपूर्ण कदम है, जो छात्रों के अनुभव को बढ़ा सकता है, सांस्कृतिक समझ को प्रेरित कर सकता है, और पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक ज्ञान के बीच की खाई को पाट सकता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली एक व्यवस्थित और संरचित दृष्टिकोण है, जो ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संप्रेषित करता है। यह केवल एक परंपरा के बजाय ज्ञान हस्तांतरण की प्रक्रिया के रूप में अपनी पहचान बनाता है। वेद साहित्य, उपनिषद, वेद और उपवेदों में निहित, भारतीय ज्ञान प्रणाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) द्वारा मान्यता प्राप्त एक मौलिक सिद्धांत है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों के मुख्य घटक—ज्ञान, विज्ञान, और जीवन दर्शन—ज्ञान, अवलोकन, अन्वेषण, और कठोर विश्लेषण के गतिशील अंतःक्रिया के माध्यम से विकसित हुए हैं। इस मान्यता और व्यावहारिक अनुप्रयोग की परंपरा ने शिक्षा, प्रशासन, कानून, न्याय, विनिर्माण, और वाणिज्य जैसे विविध क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव डाला है। भारतीय ज्ञान प्रणाली

का प्रभाव भारत की पारंपरिक और अन्य भाषाओं में फैला हुआ है, जो दस्तावेजीकृत, मौखिक, और कलात्मक परंपराओं सहित विभिन्न माध्यमों के माध्यम से प्रसारित होता है। यह व्यापक ज्ञान प्रणाली प्राचीन भारत की बुद्धिमत्ता को समाहित करती है, जिसमें इसके उपलब्धियों और चुनौतियों दोनों का समावेश है। यह भारत की भविष्य की आकांक्षाओं को समझने के लिए एक आधार प्रदान करती है, जो शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, और जीवन के सभी पहलुओं जैसे महत्वपूर्ण विषयों को छूती है। वेदों और उपनिषदों सहित वेद साहित्य की समृद्ध परंपरा में निहित, भारतीय ज्ञान प्रणाली डिजिटल शिक्षण प्लेटफार्मों में एकीकृत होने के लिए तैयार है। भारतीय ज्ञान प्रणाली पाठ्यक्रमों पर कक्षा के शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए, शिक्षकों के प्रशिक्षण और उन्मुखीकरण के लिए विशेषीकृत मॉड्यूल पर विचार किया जा रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों के भीतर विशिष्ट विषयों पर ध्यान केंद्रित करने वाले विशेष शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएंगे। भारतीय ज्ञान प्रणाली में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए ग्रैंड नेशनल चैलेंज, राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं और हैकथॉन जैसे पहलों के माध्यम से शानदार विचारों के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा। भारतीय परिषद के ऐतिहासिक अनुसंधान जैसी संस्थाओं द्वारा वैश्विक संस्थानों के साथ सहयोग से भारत-केंद्रित अनुसंधान किया जाएगा। विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों में भारतीय ज्ञान प्रणाली की स्थापना को प्रोत्साहित करने के लिए प्रारंभिक बीज वित्तपोषण प्रदान किया जाएगा। सार्वजनिक जागरूकता के प्रयासों में विविध तंत्रों का उपयोग कर भारतीय ज्ञान प्रणाली को फैलाने और बढ़ावा देने के लिए जन भागीदारी कार्यक्रमों, नागरिक विज्ञान पहलों के समान, को प्रोत्साहित किया जाएगा।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के उद्देश्य

1- भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य समकालीन सामाजिक मुद्दों को हल करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में, जैसे स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, पर्यावरण, और सतत विकास में, आगे के शोध का समर्थन और सुविधा प्रदान करना है।

➤ प्राचीन ज्ञान का एकीकरण प्राथमिक उद्देश्य अतीत से ज्ञान प्राप्त करना और भारतीय ज्ञान प्रणालियों को समकालीन और उभरती समस्याओं को हल करने के लिए एकीकृत करना है, जो निरंतर ज्ञान हस्तांतरण की

- परंपरा और 'भारतीय दृष्टि' के अद्वितीय दृष्टिकोण का उपयोग करता है।
- इसे विभिन्न क्षेत्रों में अंतःविषय शोध को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है, जिसमें कला और साहित्य, कृषि, मूल विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, वास्तुकला, प्रबंधन, अर्थशास्त्र आदि शामिल हैं।
 - भारतीय ज्ञान प्रणालियों के सभी पहलुओं पर अंतःविषय शोध को बढ़ावा देना, आगे के शोध के लिए भारतीय ज्ञान प्रणालियों का संरक्षण और प्रसार करना।
 - भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों के समावेश का उद्देश्य छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाना है, जो उन्हें समग्र और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शिक्षा प्रदान करेगा।
 - यह भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा में समाहित करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण है, जो छात्रों को एक समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शिक्षण अनुभव को स्कूल और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में वैज्ञानिक तरीके से पेश किया जाएगा।
 - भारतीय ज्ञान प्रणाली पाठ्यक्रम में जनजातीय ज्ञान, स्वदेशी और पारंपरिक सीखने की विधियों को शामिल किया जाएगा, जिसमें दर्शन, वास्तुकला, इंजीनियरिंग, भाषाविज्ञान, साहित्य, खेल, प्रशासन आदि जैसे विषयों का विस्तृत दायरा होगा। प्रासंगिक विषयों पर समर्पित पाठ्यक्रमों को पेश किया जाएगा।
 - भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के लिए उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे उन्हें इन समृद्ध परंपराओं का अन्वेषण करने का विकल्प मिलेगा।
 - शिक्षार्थियों को भारत की समृद्ध विविधता का ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से ग्रहण करना चाहिए। छात्रों के लिए विभिन्न क्षेत्रों की यात्राओं जैसी गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का शिक्षा में स्थान

भारतीय ज्ञान प्रणालियों को स्कूल और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में शामिल करने का प्रयास एक व्यवस्थित तरीके से किया जा रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में जनजातीय ज्ञान के साथ-साथ स्वदेशी और पारंपरिक शैक्षणिक पद्धतियाँ शामिल हैं, जो गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि,

इंजीनियरिंग, भाषाशास्त्र, साहित्य, खेल, और प्रशासन जैसे विभिन्न विषयों में फैली हुई हैं। पाठ्यक्रम में जनजातीय एथनो-चिकित्सा प्रथाओं, वन प्रबंधन, और पारंपरिक जैविक कृषि तकनीकों पर विशेष पाठ्यक्रम शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त, माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर एक आकर्षक वैकल्पिक पाठ्यक्रम भी पेश किया जाएगा। नीति यह महत्व देती है कि शिक्षार्थियों को भारत की समृद्ध विविधता के साथ प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना चाहिए। छात्रों की विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा जैसे सरल गतिविधियों को शामिल करने की योजना है, जो न केवल पर्यटन को बढ़ावा देगी बल्कि भारत की सांस्कृतिक विविधता, परंपराओं और विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान की समझ और सराहना को भी बढ़ाएगी। भारतीय ज्ञान प्रणालियों का शिक्षाशास्त्र मौलिक रूप से दिलचस्प और समग्र है, जो कई स्तरों पर learners को संलग्न करता है। केवल रटने की प्रक्रिया, जैसे संस्कृत के श्लोक, इन प्रणालियों में अनुभवात्मक अध्ययन, आलोचनात्मक सोच, और व्यावहारिक कौशल के विकास पर जोर दिया गया है। कहानी सुनाना, बहस, और छात्रों के बीच इंटरैक्टिव चर्चाओं को प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि वे जटिल विचारों का पता लगा सकें और अपने और अपने चारों ओर की दुनिया की गहरी समझ विकसित कर सकें। बच्चों में तनाव की भावना को पारंपरिक शिक्षाशास्त्र के उपयोग से कम किया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का वर्तमान परिदृश्य में महत्व

भारतीय ज्ञान प्रणाली एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक ज्ञान के क्रमबद्ध हस्तांतरण को संदर्भित करती है, जो वैदिक साहित्य, उपनिषदों, वेदों और उपवेदों पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस प्राचीन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध विरासत को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकार करती है, जो ज्ञान के हस्तांतरण के संरचित दृष्टिकोण को उजागर करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली, ज्ञान, विज्ञान और जीवन-दर्शन को समाहित करती है, जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण के माध्यम से विकसित हुई है। यह प्राचीन प्रथा समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव डाल चुकी है, जिसमें शिक्षा, कला, प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, उत्पादन और वाणिज्य शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इसने भारत की शास्त्रीय और अन्य भाषाओं पर

महत्वपूर्ण छाप छोड़ी है, जो ग्रंथों, मौखिक परंपराओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से संप्रेषित होती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक ज्ञान के क्रमबद्ध हस्तांतरण को संदर्भित करती है, जो वैदिक साहित्य, उपनिषदों, वेदों और उपवेदों पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस प्राचीन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध विरासत को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकार करती है, जो ज्ञान के हस्तांतरण के संरचित दृष्टिकोण को उजागर करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली ज्ञान, विज्ञान और जीवन-दर्शन को समाहित करती है, जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण के माध्यम से विकसित हुई है। यह प्राचीन प्रथा समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव डाल चुकी है, जिसमें शिक्षा, कला, प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, उत्पादन और वाणिज्य शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इसने भारत की शास्त्रीय और अन्य भाषाओं पर महत्वपूर्ण छाप छोड़ी है, जो ग्रंथों, मौखिक परंपराओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से संप्रेषित होती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्राचीन भारत के ज्ञान को समाहित करती है, जिसमें इसकी सफलताएँ और बाधाएँ शामिल हैं, और यह भारत की भविष्य की आकांक्षाओं के लिए एक दृष्टि प्रदान करती है, विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और जीवन के सभी पहलुओं में। स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में शामिल करना एक महत्वपूर्ण कदम है, जो छात्रों के अनुभव को बढ़ा सकता है, सांस्कृतिक समझ को प्रेरित कर सकता है, और पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक ज्ञान के बीच की खाई को पाट सकता है। आयुर्वेद, योग, वेदांत, और वेद विज्ञान, जो इन प्रणालियों के अभिन्न घटक हैं, समकालीन विश्व में भी प्रासंगिक बने हुए हैं। आयुर्वेद, एक पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणाली, कल्याण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का समर्थन करता है। एक ऐसी दुनिया में जहां स्वास्थ्य संबंधित चुनौतियाँ बढ़ रही हैं, आयुर्वेद प्राकृतिक उपचार विधियों, व्यक्तिगत उपायों, और निवारक स्वास्थ्य उपायों पर ध्यान केंद्रित करता है। प्राचीन भारत से उत्पन्न योग, आंतरिक, शारीरिक, और आध्यात्मिक कल्याण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। आसन (मुद्राएँ), प्राणायाम (श्वास नियंत्रण), और ध्यान जैसी प्रथाओं को शामिल करते हुए, योग तनाव को कम करने, आंतरिक स्वास्थ्य को बढ़ाने, और समग्र कल्याण को

मजबूत करने में प्रभावी साबित हुआ है। विशेष रूप से आज की तेज-तर्रार और तनावपूर्ण दुनिया में। भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ सभी प्राणियों के बीच आपसी संबंध पर जोर देती हैं, सतत जीवन के व्यवहार को बढ़ावा देती हैं, जिसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (दुनिया एक परिवार है) के सिद्धांत में संक्षिप्त किया गया है। पर्यावरणीय चिंताओं और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता के मद्देनजर, ये सिद्धांत बढ़ते महत्व के हैं। वेदांत जैसी प्रणालियाँ वास्तविकता के स्वरूप, जागरूकता, और आध्यात्मिक कल्याण के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। प्राचीन वेदों पर आधारित, ये भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जागरूकता, और अर्थ और उद्देश्य की खोज पर मार्गदर्शन देती हैं एक आधुनिक दुनिया में जहां कई लोग गहरे संतोष की तलाश कर रहे हैं। भारतीय ज्ञान प्रणालियों ने ऐतिहासिक रूप से गणित, खगोलशास्त्र, और धातुकर्म में वैज्ञानिक उन्नति में योगदान दिया है। शून्य, दशमलव प्रणाली, और त्रिकोणमिति जैसे अवधारणाएँ, जो प्राचीन भारतीय सोच से उत्पन्न हुई हैं, आज के विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली आज भी अत्यधिक प्रासंगिक बनी हुई है, जो तनाव प्रबंधन और स्थिरता जैसी समकालीन चुनौतियों के लिए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है। इसके विशाल ज्ञान भंडार में व्यक्तियों, समुदायों, और मानवता को ऊंचा उठाने की क्षमता है। प्राचीन भारत के ज्ञान को समाहित करती है, जिसमें इसकी सफलताएँ और बाधाएँ शामिल हैं, और यह भारत की भविष्य की आकांक्षाओं के लिए एक दृष्टि प्रदान करती है, विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और जीवन के सभी पहलुओं में। स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में शामिल करना एक महत्वपूर्ण कदम है, जो छात्रों के अनुभव को बढ़ा सकता है, सांस्कृतिक समझ को प्रेरित कर सकता है, और पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक ज्ञान के बीच की खाई को पाट सकता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली विभाग के कार्य

- भारत और विदेशों में विभिन्न संस्थानों द्वारा किए गए भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित अंतःविषय कार्यों की सुविधा और समन्वय करना, जिसमें विश्वविद्यालय, शोध प्रयोगशालाएँ, और मंत्रालय शामिल हैं।
- विषय-वार अंतःविषय शोध समूहों की स्थापना, मार्गदर्शन, और निगरानी करना, विभिन्न

- संस्थानों और विषयों के शोधकर्ताओं को एकत्रित करना।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली के लिए लोकप्रियता योजनाएँ बनाना और प्रचारित करना, परियोजना वित्तपोषण की सुविधा प्रदान करना, और शोध और नीति सिफारिशों के लिए तंत्र विकसित करना।
 - विभिन्न क्षेत्रों में प्राचीन और समकालीन भारतीय ज्ञान में योगदान देने वाले व्यक्तियों और संगठनों का एक व्यापक डेटाबेस तैयार करना।
 - समकालीन सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए समग्र स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, प्रकृति, पर्यावरण, और सतत विकास जैसे क्षेत्रों में आगे के शोध को बढ़ावा देना और सक्षम करना।
 - भारतीय ज्ञान प्रणाली में योगदान देने वाले विद्वानों और संस्थानों की पहचान करना, प्रमुख क्षेत्रों की वर्गीकरण करना, और उनकी कार्यों की रिपोर्टों को नियमित प्रकाशनों के लिए संकलित करना।
 - भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबंधित शोध गतिविधियों, कार्यशालाओं, सेमिनारों, और प्रकाशनों के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना। आधुनिक पाठ्य पुस्तकों में भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करने के उपाय सुझाना।
 - शिक्षा मंत्रालय के तहत सामान्य विश्वविद्यालयों, संस्कृत विश्वविद्यालयों, और अन्य संस्थानों में भारतीय ज्ञान प्रणाली सेल स्थापित करना।
 - भारतीय ज्ञान प्रणाली के क्षेत्र में काम कर रहे संस्थानों, मंत्रालयों, स्वतंत्र विद्वानों, और निजी संस्थानों के बीच सहयोग और समन्वय की शुरुआत करना ताकि अंतःविषय शोध को बढ़ावा मिल सके।
 - भारतीय ज्ञान प्रणाली विभाग के उद्देश्यों की योजना बनाने, कार्यान्वित करने, और निगरानी करने के लिए विशेषज्ञ समूह और समितियों का गठन करना।
 - यह व्यापक ढांचा पारंपरिक भारतीय ज्ञान को आधुनिक शोध के साथ एकीकृत करने, सहयोग को बढ़ावा देने, और भारत की समृद्ध बौद्धिक विरासत के संरक्षण और प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए है।

➤ भारतीय परंपरा के विशाल ज्ञान से प्रेरणा लेते हुए, समकालीन समस्याओं का समाधान करने के लिए अतिरिक्त शोध को बढ़ावा देने और समर्थन देने का उद्देश्य है।

➤ मुख्यधारा की शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली पाठ्यक्रमों का समावेश छात्रों को प्रेरित करने के साथ-साथ पारंपरिक सीखने की प्रणालियों की समृद्ध विरासत को संरक्षित करने की अपेक्षा की जाती है।

समकालीन समस्याओं का समाधान

भारतीय ज्ञान प्रणाली महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करती है और विभिन्न क्षेत्रों में समकालीन चुनौतियों का समाधान कर सकती है। प्राचीन ग्रंथों जैसे अर्थशास्त्र में उल्लेखित सतत कृषि प्रथाओं से लेकर आयुर्वेद के समग्र स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली तक, ये परंपराएँ समय परखी और पर्यावरणीय रूप से सतत समाधान प्रस्तुत करती हैं। पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी का एकीकरण नई पीढ़ियों में जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य देखभाल, और सतत विकास जैसी समस्याओं के लिए नवाचार समाधान की दिशा में योगदान देने की क्षमता रखता है। एकीकरण की दिशा में, विश्वविद्यालयों को सभी पाठ्यक्रमों में छात्र क्रेडिट या भारतीय ज्ञान प्रणाली वैकल्पिक पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है, ताकि विभिन्न विषयों के छात्रों को पारंपरिक ज्ञान का अनुभव हो सके। इस पहल का समर्थन करने के लिए, विभिन्न क्षेत्रों में शोध, शिक्षा, और जन वाह्य गतिविधियों के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्रों की स्थापना का प्रस्ताव दिया गया है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली आज के आधुनिक विश्व में प्रासंगिक है और तनाव मुक्ति, सततता आदि जैसे मुद्दों को संभालने के लिए उपयोगी सलाह प्रदान करती है। यह एक समृद्ध ज्ञान प्रदान करती है जिसे व्यक्तियों, समाजों, और समुदायों को बेहतर बनाने के लिए लागू किया जा सकता है। यह एक महत्वपूर्ण कदम है जो छात्रों के शैक्षणिक अनुभवों को बढ़ाता है, अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है, और पारंपरिक ज्ञान और समकालीन ज्ञान के बीच के अंतर को समाप्त करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली को उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में शामिल करना एक अधिक समग्र, विविध, और समावेशी सीखने का वातावरण प्रदान कर सकता है, जो छात्रों को आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए नैतिकता,

बुद्धिमत्ता, और अपनी सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ से लैस करता है। शिक्षकों को इन पाठ्यक्रमों को रोचक तरीके से बनाने और सिखाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि इन पहलों का प्रभाव कक्षा के बाहर भी महसूस किया जा सके, क्योंकि उच्च शिक्षा संदर्भ सूची—

संस्थान युवा पीढ़ियों को सांस्कृतिक जागरूक और नैतिक रूप से जिम्मेदार व्यक्तियों में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो भारत के ज्ञान-आधारित समाज की प्रगति में योगदान देते हैं।

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली खंड 1
2. <https://iks.iitgn.ac.in/wpcontent/uploads/2016/01/Indian-Knowledge-Systems-Kapil-Kapoor.pdf>
3. <https://orientviews.wordpress.com/2013/08/21/how-colonial-india-destroyed-traditional-knowledge-systems/>
4. <https://iksindia.org/about.php>
5. www.education.gov.in <https://www.sanskritimagazine.com/india/traditionalknowledge-systems-of-India/>
6. Ancient Indian Knowledge Systems and their Relevance Today – With an Emphasis on Arthaśāstra"=Written By: Brig AP Singh, SM*, VSM, (March 2, 2022)
7. Indian Knowledge Systems Vol. 1
8. <https://iks.iitgn.ac.in/wp-content/uploads/2016/01/Indian-Knowledge-System>